अव्यय

अव्यय - अर्थ एवं प्रयोग

'अ' + 'व्यय'

अर्थात, जिसका व्यय न हो। अन्य शब्दों में कहें तो वे शब्द जिनमें परिवर्तन (व्यय) नहीं होता, अव्यय कहलाते हैं।

जैसे: अत्र, तत्र, अद्य, श्व आदि अव्यय हैं।

यहाँ हम आपको कुछ प्रमुख अव्ययों के अर्थ तथा उनके प्रयोग के बारे में बता रहे हैं।

1. अलम्

'अलम्' का अर्थ होता है, **'मत करो'**।

जैसे:

अलम् कोलहलम्।

शोर मत करो।

अलम् चिन्तया।

चिन्ता मत करो।

2. अन्त:

'अन्त:' का अर्थ होता है, **'अन्दर'।**

जैसे:

माता अन्त: गृहे अस्ति।

माँ घर के अन्दर है।

रुधिर: शरीरे अन्त: अस्ति।

खून शरीर के अन्दर होता है।

3. बहि:

'बहि:' का अर्थ होता है, **'बाहर'**।

जैसे:

बहि: गच्छ:।

बाहर जाओ।

पिता गृहे बहि: अस्ति।

पिता घर से बाहर हैं।

4. अध:

'अध:' का अर्थ होता है, **'नीचे'।**

जैसे:

भ्रमका: वृक्षस्य अध: तिष्ठन्ति।

पर्यटक (घूमने वाले) वृक्ष के नीचे बैठते हैं।

धरा: अध: जलम् अस्ति।

पृथ्वी के नीचे जल है।

5. उपरि

'उपरि' का अर्थ होता है, **'ऊपर'**।

जैसे:

वाहनस्य उपरि पताका अस्ति।

वाहन के ऊपर झण्डा है।

पर्वतस्य उपरि जन्तव: सन्ति।

पर्वत के ऊपर जन्तु हैं।

6. उच्चै:

'उच्चै:' का अर्थ होता है, **'ज़ोर से'**।

जैसे:

<u>उच्चै:</u> वद।

ज़ोर से बोलो।

उच्चै: पठ।

ज़ोर से पढ़ो।

7. नीचै:

'नीचै:' का अर्थ होता है, **'धीरे से'**।

जैसे:

<u>नीचै:</u> वद।

धीरे बोलो।

नीचै: पठ।

धीरे पढ़ो।

8. कदापि

'कदापि' का अर्थ होता है, **'कभी नहीं'।**

जैसे:

अहं <u>कदापि</u> असत्यं न वदिष्यामि।

मैं कभी भी असत्य नहीं बोलूगाँ।

राज्ञ: कदापि प्रजां न हनति।

राजा कभी प्रजा को नहीं मारता है।

9. पुनः

'पुन:' का अर्थ होता है, **'फिर'**।

जैसे:

स: पुन: गृहं गच्छति।

वह फिर से घर जाता है।

बालका: पुन: पुन: पठन्ति।

बच्चे बार-बार पढ़ते हैं।

आप उपरोक्त दिए गए अव्ययों की सहायता से सरल वाक्य बनाने का प्रयास करें।